संसार का हर पिता अपने बेटे से जो कहना चाहता है
उन सारी बातों का प्यारभरा,
वात्सल्यपूर्ण और प्रेरक उद्‌गार

मेरे लाड़ले बेटे को

दिलीप भट्ट

RUDRA
PUBLICATION
...publishing positivity...

25/B, Govt. Society, B/h, Municipal Market. Off. C.G. Road,
Navrangpura, Ahmedabad - 380 009.
Ph. : 079-26447393 • Mobile : 098259 25947
email : rudrapublication1@gmail.com
www.rudrapublication.com • Buy online www.clickabooks.com

For Home Delivery : Mobile : +91-99241 43847

मेरे लाड़ले बेटे को

दिलीप भट्ट

Copyright © Adhia International

All Rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any for or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise without the prior written permission of the copyright owner.

1st Edition : 17 September, 2013

Price : ₹ 60/–

: Hindi Translation :
Paresh Kumar

: Design & Layout :
Manu Patel
9898390057

: Printing :
Rudra Publication
Ahmedabad
098 259 259 47

: Publisher :
Adhia International
Ahmedabad

यह पुस्तक भेंट देने के लिए थोक ऑर्डर पर विशेष डिस्काउन्ट दिया जायेगा। इसके साथ ही भेट देने वाले का नाम और संदेश लिखा एक अतिरिक्त पृष्ठ पेस्ट किया जायेगा।

सस्नेह

यह पुस्तक

..... को

सप्रेम अर्पण करते हुए असीम हर्ष का अनुभव करता हुं । मेरे बेटे इस पुस्तक का प्रत्येक शब्द मैंने तुझे ही ध्यान में रखकर तेरे लिए ही लिखा है यह मानकर तु इसे ह्रदय में स्थान देना । याद रखना मेरा आशीर्वाद हर कदम पर तेरे साथ है ।

.....

.....

लेखक का कथन

गुजराती में इस पुस्तक की लोकप्रियता के कारण इसके पंद्रह संस्करण प्रकाशित हो चुके है और हिन्दी भाषी पाठकों की मांग को ध्यान में रखकर इसका हिन्दी भाषा में भी यह प्रथम संस्करण प्रकाशित हो रहा है ये खुशी की बात है।

डॉ. जितेन्द्र अढिया एक नयी तरह का सकारात्मक आंदोलन चला रहे है। जब सारे लोग इस दुनिया को बाहर से ठीक करने निकल पडे है तब उन्होंने लोगों को आंतरिक समृद्धि देने की मानो शपथ ली है। डॉ. अढिया ने मेरी पुस्तकों को पूरे उत्साह के साथ विश्वभर के भारतीयों तक पहूंचाने का प्रयास किया है वो किसी भी लेखक के लिए खुशी की बात हो सकती है।

पिछले कुछ सालों से मैं उनके इस यज्ञकार्य में सक्रिय रुप से जुड़ा हुआ हुं। उनकी निष्ठा, सालस स्वभाव और वचनबद्धता सभी के लिए प्रेरक है।

यह पुस्तक भी उसी दिशा में एक नया कदम है। पिता के द्वारा बेटे के अर्धजाग्रत मन का यहां प्रोग्रामिंग किया गया है। अपने बेटे के सुख की कामना करनेवाला कोइ भी पिता यह पुस्तक वात्सल्यपूर्वक अपने बेटे को दे सकता है और निश्चित रुप से इसके बहुत अच्छे परिणाम मिलेंगे इसका मुजे भरोसा है।

अपने पुत्र भौमिक को कैसे भूलुं ? उसके लिए और उसके जैसे लाखों बेटों के लिए यह पुस्तक लिखी गई है इसका मुजे गौरव है। मेरी प्यारी बेटी को पुस्तक की तरह इस पुस्तक को भी पाठकों का बहुत अच्छा प्रतिसाद मिला है। आपके प्रतिभाव मेरा उत्साह और आनंद बढायेंगे।

- दिलीप भट्ट

शब्दरथ के सारथि

श्री दिलीप भट्ट पिछले पचीस सालों से पूरे अहमदाबाद में अपनी प्रवचन कला से प्रचलित है। आपने आज तक कई सार्वजनिक प्रवचन दिए है। खुशी की बात यह है की आप वर्गशिक्षा अर्थात क्लासरुम टीचिंग के प्रखर पुरस्कर्ता है। नयी पीढ़ी के शिक्षाविद् होने के साथ साथ आप एक अच्छे गद्यकार भी है। आपकी वाणी की मोहीनी का हम में से कइ लोगों को अनुभव हो चूका है। व्यक्तिगत जीवन में आप लेखक, पत्रकार, माध्यमिक शिक्षक एवम् उच्च शिक्षा में इन्टरनेट जर्नालिजम के अध्यापक है। आप युनिवर्सिटी ग्रांट कमिशन दिल्ली के रीसर्च फेलो भी है।

'गुजरात समाचार' दैनिक में 'कॉफि हाउस' और 'हृदयकुंज' जैसी लोकप्रिय कॉलम और 'संदेश' दैनिक की 'सुप्रभात', 'संसार', और 'प्रतिबिंब' जैसे लोकप्रिय कॉलम भी आपने लिखे है। एक विराट पाठक समूह का आपको प्यार मिला है। गुजराती में आपने 'असामान्य ज्ञान' नामक एन्साइक्लोपीडिया ग्रंथ भी दिया है। साथ ही मनोविज्ञान के अभ्यासी होने के कारण आपने अर्धजाग्रत मन की शक्तिओं पर आधारित वामलोक नाम की नवलकथा भी लिखी है। विश्व की दो महान भाषाएं अंग्रेजी और संस्कृत का आप में समन्वय देखने को मिलता है। अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में आपने संस्कृत का अध्यापन भी किया है। युनिवर्सिटी के उच्च शिक्षा केन्द्र में आप संवाहक की जिम्मेदारी भी अदा कर चूके है। वर्तमान समय में आप बी.एड और पी.टी.सी कॉलेज के को-ऑडिनेटर की जिम्मेदारी अदा कर रहे है।

अपने आज तक के जीवन काल में आप अनेक साधु संत, साधक, रहस्यमयी ज्ञानमार्गी, उच्च स्तर के उपासक, और देश विदेश के मोटिवेटर्स – ट्रेनर्स के सीधे संपर्क में रहे है। आप खुद एक अच्छे ट्रेनर है। केम्ब्रीज युनिवर्सिटी के अहमदाबाद के इन्टरनेशनल सेन्टर के साथ भी आप जुडे है। इन्टरनेट की कई वेबसाइट पर मन की अगाध शक्तिओं पर लिखे आपके मौलिक अनुभवपूर्ण एवम् चिंतनीय विचार प्रकट हुए है। पूर्व और पश्चिम के देशों की किताबों का व्यापक अध्ययन आपकी वाणी को दैदीप्यमान बनाता है। प्रकृति से भावनाशील, स्वाभिमानी, आत्मविश्वासु और सात्विक होने के साथ आपने विज्ञान और टेक्नोलोजी पर भी कई अभ्यासपूर्ण लेख लिखे है।

– डॉ. जितेन्द्र अढिया

अनुक्रम

मेरा आशीर्वाद सदा तेरे साथ है ९
देखो अपनी मां को भूल मत जाना १०
तेरे सुख में ही हमारा सुख ११
सबसे बडी चीज है ज़िंदगी १२
इसीलिए मेरा असीम प्यार बरसता है १३
हमारा हृदय और आत्मा तो एक ही है १४
तब उन्हें जानना होगा कि मेरा बेटा क्या है १५
जब तू मुझ से ड़रता है १६
तू हां कहना सिखे उससे पहले ना कहना सिख लेना १७
दयालु बनना पर दया के पात्र कभी मत बनना १८
तू यह सब शायद तभी समज पाएगा १९
इस संसार को तुझसे बहुत कुछ सिखना है २०
स्वाभिमान के मोती की माला तुम बुनते रहो ये मेरा स्वप्न है २१
अच्छे दिखने का आधार अच्छे होने पर है २२
तू सबका बनकर रहना बेटा २३
इस महान राष्ट्र का हित कभी मत भूलना २४
तेरे पीछे आनेवाली पीढ़ीयों के लिए तू रास्ता बनाते जाना २५
तेरी सफलता में सब हो सहभागी २६
उस सुख का तू अधिकारी है २७
सप्तपदी में तेरे कदम यानी की नये जीवन का उदय २८
हम सब हमेशां तुम्हारे साथ है, बेटे २९
तुम्हारे रुप में कुदरत मेरे आंगन में खेल रही है ३०
तेरा अस्तित्व ही है मेरा आनंद ३१
तुम अपनी भावनाओं का व्यय मत करना ३२

अपने भीतर भी गोथा लगाते रहना ३३
उसी में तुम्हारा और तुम्हारे भविष्य का गौरव है ३४
ऐसे नये समाज की तू कामना करना ३५
हर काम को तुम्हें थोडा और अच्छा करना है ३६
तुम चाहे कितने ही महान हो जाओ पर
उन बरगदों के पेड से बड़े नहीं हो ३७
अपने सर्वोत्तम संकल्प के महामूल्य रत्नों को प्राप्त करते रहना ३८
तुम्हारे हर कदम पर तुम्हें मिली है ३९
तुम्हें कभी पीछे नहीं लौटना है ४०
तुम्हारी और सफलता की दोस्ती गहरी है ४१
तो आगे का कदम उठाते हुए रुकना पड़ेगा ४२
वह सब तुम्हारे अपने ही है ४३
तुम देश को जीताना और जिंदा रखना ४४
तुम अपने युग को मुनाफे की ओर ले जाना ४५
मेरे बेटे तुम आज से ऐसी कल्पना करना ४६
एक दिन तुम्हें तुम्हारा बचपन याद आयेगा ४७
मैंने पैसों के लिए तुम्हारी परवरिश नहीं की ४८
अपने आलोचकों को श्रेष्ठ शिक्षक मानना ४९
किसी की परिक्रमा में मत उलझना ५०
सबका मीठा-मधुर स्मित तुम्हारा स्वागत करता है ५१
तुम्हारे सत्कर्म के साधनउसी से निर्मित होंगे ५२
तुम अपनी आंतरशक्ति कीभी आराधना करना ५३
रुकना नहीं... कहीं रुकना नहीं ५४
सफलता का मुख्य आधार तुम्हारी तीव्र मनोकामना है ५५
मैंने तुम्हें सच्ची सुगंध का परिचय करवाया है ५६
तु अपनी ज़िंदगी के मैदान में डंटे रहना ५७

मेरे बेटे,

मैं तुझे इसलिए इतना चाहता हुं ता की तु सबको चाह सके। मेरा प्रेम कभी तुझे धोध की तरह घेर लेता है और तुझे घूटन भी देता है, वो इसलिए की तु इस दुनिया को सच्ची तरह से चाहे तब तेरा प्यार किसी को कम न लगे।

मेरा आशीर्वाद सदा तेरे साथ है

मेरे प्यारे बेटे,
मैं सदा तुजसे प्रसन्न हुं, खुश हुं, संतुष्ट हुं।
तुम ज्यादा प्रगति करो ऐसी मेरी अपेक्षा के कारण,
अगर मैं तुम्हें कभी दो कडे शब्द कह दुं,
तो इसका मतलब यह नहीं की मैं तुमसे नाराज हुं।
तू मेरा बेटा है, शिष्य है और आगे जाकर दोस्त भी बनेगा।
तुम मुजसे खुलकर बात कर सकते हो,
यही मेरे पिता होने की सफलता की पहली निशानी है।
बेटे, कभी कभी तू मेरे निर्णय का विवेकपूर्ण विरोध करता है,
तब मुजे बहुत अच्छा लगता है। मुझे यकीन होता है कि,
हम दोनों युगों तक एक दूसरे को, अच्छी तरह समज पाएंगे।
क्योंकी विरोध करने की योग्यता और विवेक
नयी पीढ़ी का सबसे अच्छा गुण है।
तुझमें भी इस गुण को अंकुरित होता देख मुजे खुशी होती है।
कभी कभी तु मुज पर आनेवाला अपना गुस्सा
अपने दो कोमल होठों के बीच दबा देता है,
तब तेरे हर अव्यक्त शब्द की गूंज गूंजती है मेरे हृदय में।
तुम्हारी शांति मेरा आधार है।
बेटे हर सत्य तुरंत समज में नहीं आता,
कुछ सत्यों को समजने के लिए धैर्य रखना आवश्यक है,
वह धैर्य, जो तुझ में है।

देखो अपनी मां को भूल मत जाना

बेटा, जिसने खुद में से तुझे बनाया है,
तेरा संपूर्ण अस्तित्व जिस की देन है
वह तेरी माता और तेरी जीवनदाता है।
सर्दीओं की कातिल ठंडी रातो में भी जागते रहकर,
उसने तेरे कानों को मीठी लोरियां सुनाइ है।
उसने तेरी आंखो में देखा है आनेवाले कल को।
दुनिया की हर मां बच्चे को जन्म देकर,
केवल अपने लिए ही नहीं जीती,
वह तो सिर्फ अपने बच्चों के लिए ही जीती है।
उसका व्यक्तित्व बदलता है, पत्नीत्व सीकुड जाता है,
और उसमें पैदा होता है मातृत्व।
वह मातृत्व जो अपना प्राणार्पण करता है दूसरों के लिए।
उसकी आंख में आँसू न आए उसका तु खयाल रखना बेटे।
तेरे हर सुख के लिए
हमेशां प्रार्थना करनेवाली केवल तेरी मां है।
शायद कुदरत भी मां की ही बात सूनती है
और मैं भी।
बेटे तू संसार की भागदौड में
अपनी मां को भूल मत जाना।

तेरे सुख में ही हमारा सुख

मेरे प्यारे बेटे, तेरे कंधे पर के काव़ड में बैठकर
बंध आंखो से हम यात्रा न करें
तो भी तू हमारा वही श्रवण है, यह हम जानते है।
प्यास से सूखते हमारे गले को
अमृत जैसा मीठा जल पीलाने के लिए,
तू अपने हृदय में प्राण हरने वाले
तीर भी सहन कर सकता है,
यह हम जानते है।
मेरे प्यारे बेटे, केवल श्रवण के ही नहीं,
संसार के सारे बच्चों के माता पिता
बंध और अंध आंखों से
अपने बच्चों पर भरोसा कर ज़िंदगी जीते है।
जिस हाथों से तेरा पलना झुलाया था
उसी हाथों की एक दिन तू छडी़ बनेगा बेटे।
तू हमारी सेवा करे उससे भी ज्यादा खुशी की बात,
हमारे लिए तो यही है की
तू जहां भी रहे, वहां हमेशा
प्रगति करे, संपन्न हो, प्यार बांटे और खुदगर्ज बने,
यही है हमारे लिए सबसे बडा सुख।